आंतर भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंधसंपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी -413 522 (महा.)
ईमेल- aryavidyavanshi@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल - editor.antarbharati@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्यसंपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
डॉ.विजया वारद ◆ ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
अमर हबीब ◆ पांडुरंग नाडकर्णी ◆ मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य

छायाचित्र : स्थानीय फोटोग्राफर

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में ...

संपादकीय		....	05
आन्तर भारती	- 1 -	तुका म्हणे	08
आन्तर भारती	- 2 -	महात्मा बसवेश्वर वचन ...	09
आन्तर भारती	- 3 -	तिरुवल्लुवर वाणी	10
धुनी तरुणाई	-	नई संस्कृति की खोज	11
काव्य भारती	- 1 -	आखिर क्यों	15
काव्य भारती	- 2 -	वंदे मातरम्	15
विशेष आलेख	- 1 -	जादू-टोना	16
चिंतन भारती	- 1 -	सजग राजनीतिज्ञ	20
चिंतन भारती	- 2 -	कामरेड पानसरे..............	22
चिंतन भारती	- 3 -	मेलघाट की	25
समाचार भारती	- 1 -	निधर्मी होने का	28
समाचार भारती	2	श्रमर्षि बाबा	29
विशेष आलेख	- 2 -	प्रयोगशील..................	31

आन्तर भारती प्रकाशन

'साने गुरुजी चित्रावली - 120 रू.'

'यति यदुनाथ - 50 रू.' 'साने गुरुजी विशेषांक - 50 रू.'

'आन्तर भारती गीतमाला - 15' 'कॅसेट/सी.डी.-30 रू.'

प्राप्ति स्थान : आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी - 413 522 (महा)

Mo.09823156777 E-mail:aryavidyavanshi@gmail.com

संपादकीय...

बंदूक की गोली क्या जाने इनसानियत की बोली?

आंध्र प्रदेश के शेषाचलम जंगलों में 7 अप्रैल को 20 लकड़हारों को पुलिस की गोलियों ने निर्मम रूप से मार गिराया । मृतकों पर लाल-चंदन की तस्कीरी का आरोप लगाया गया और पुलिस की कार्रवाई को 'एनकाउंटर' की संज्ञा दी गई । आमतौर पर अपराधियों, आतंकियों, तस्करों आदि का सामना करने के लिए पुलिस को गोली तभी चलानी पड़ सकती है, जब आक्रमणकारियों के हाथ में भी बंदूक हो और उन्होंने अक्रामक बनकर गोली चलानी शुरू की हो । मगर शेषाचलम की घटना के संबंध में कहा जा रहा है कि मारे गए व्यक्ति निहत्थे थे । इस संबंध में पुलिस का तर्क अलग है, मगर यह तो निश्चित है कि उन आरोपित तस्करों के पास बंदूक नहीं थे । कई चश्मदीद गवाहों के हवाले से अखबारों ने रिपोर्टिंग की है कि मारे गए व्यक्तियों को रोजी-रोटी दिलाने का लालच देकर एकाध दिन पूर्व ही बिचौलिये जंगली इलाके के आस-पास उन्हें ले गए थे । रोजी-रोटी के बहाने मज़दूरी करने के लिए निकले लोगों को निर्मम रूप से पुलिस की गोलियों का शिकार होना पड़ना दर्दनाक घटना है। ये सरकारी पक्ष की ओर से मिले तो मज़दूरी है, तस्करियों से मिले जहरीली रोटी, जिसने उनके प्राण लील ली है । वैसे सरकार के साथ दोनों का वैध या अवैध संबंध जरूर है, मगर रोजी से वंचित उन निरीह मज़दूरों का नहीं । जिन जन की मान-प्राण की रक्षा करना सरकार की जिम्मेदारी है, उसीके फर्माने से रोटी की जगह गोली गले उतरने जैसी यह सच की घटना, किसी भी मानववादी के दिलों-दिमाग में पच नहीं पाने वाली है। इनसानियत के आर्तनाद की बोली को बंदूक की गोली कब जान व समझ पाई है ?

सुरक्षा, मुठभेड़, कानून और व्यवस्था जैसे बाहनों में अपरिहार्य स्थितियों में ही हवा में गोली चलाकर भीड़ को तितर-बितर करके स्थिति पर काबू पाने के लिए ही शायद बंदूक धारण करना पड़ता है। मगर आलकल हो रही घटनाओं से यह सवाल उठता है कि क्या सीधा लोगों को मार गिराने के वास्ते ही पुलिस को बंदूक दिए जा रहे हैं? इस घटना को लेकर इस बीच लगातार काफी हंगामा जारी है। वैसे कई राजनीतिक पार्टियों इस हंगामे के पीछे हैं। अखबार अप्रत्यक्ष रूप से यह आरोप जरूर लगा रहे हैं कि लाल चंदन की तस्करी की माफिया के साथ कई राजनेता व बड़े अधिकारियों के हाथ मिल चुके हैं । चंदन तस्करी के बहाने करोड़ों रूपए हर महीना इनके बीच बंटते रहते हैं। यह तो अनैतिक खनन से भी बढकर बडा माफिया है, जो जंगलों के घने हरियाली के बीच बड़े तस्करों व नेताओं के हाथों में हरे पत्तों की भांति करोंडों के पैसे बांटते रहते हैं। शेषाचलम के प्रस्तावित मामले को लेकर मानवाधिकार आयोग, अदालत, न्यायिक अभिकरण सक्रिय हैं । मारे गए आरोपी तमिलनाडु

से हैं, अतः आंध्र और तमिलनाडु के बीच गर्मी बढ़ गई है । एक दर्दनाक घटना के बाद ये सारी गतिविधियाँ तो सामान्य हैं, मगर इनसानियत के विरूद्ध बढ़ती खतरनाक प्रवृत्ति ही चिंताजनक है वह भी विशेषकर कानून-व्यवस्था के नाम से फर्जी मुठभेडों, भोले-भाले किसान-मज़दूरों, दलितों, आदिवासियों आदि को लगातार हिरासत में रखने की परंपरा चल पड़ना और भी चिंता का विषय है। शेषाचलम की घटना में विशेष कार्यबल की कार्रवाई की आपत्ति तो होनी ही चाहिए । भविष्य में ऐसी कार्रवाइयाँ न हो, इसके लिए डटकर प्रतिरोधी आवाज़ की जरूरत है।

जनतंत्र की तमाम परिभाषाएं आज कई विकृत रूप धारणकर अक्सर इनसानियत के लिए खतरा पैदा हो रहा है। यह कभी शासक पक्ष की ओर से, कभी असामाजिक तत्वों की ओर से । यहाँ 'कभी' अपवाद ही है, 'हर पल' ही सार्थक लगता है। देश की सुरक्षा के लिए कई बंदूक, गोली-बारूद की जरूरत पड़ रही है, वह भी अपरिहार्य परिस्थितियों में, जबकि बाहरी ताकतें जब बढकाऊ बनकर घुसपैठ करने की कोशिश करती हैं, तब तो कोई मतलब है, मगर विडंबना यह है कि देश के भीतर सशस्त्र दलों और बलों का ही बोल-बाला है, यह क्यों? एक-एक नेता की सुरक्षा के बहाने कितने बंदूकधारी जवान शासन की ओर से, और कितने ही नेताओं की गुंडागिरी के पैसों से या पैरवी से तैनात हो जाते हैं, इसका कोई हिसाब नहीं है। केवल इन बंदूकों की गोलियों से ही नहीं, इन तथाकथित राष्ट्रसेवकों की गुंडागर्दी से कितने अबोध इनसान मारे जा रहे हैं, यह सब अपनी आंखों को काली पट्टी बांधकर आदलतों में कैद न्याय की देवता को क्या पता?

असल में इनसानियत के लिए शासन व्यवस्था से क्या मतलब? इनसानियत तो सह जीवन में है। जंगलों और जंगलों के उत्पादों पर सरकार का हस्तक्षेप बढने से जंगल पर आश्रित आदिवासियों के समक्ष रोजी-रोटी की जो समस्या खड़ी हुई है, उसके लिए हल ढूँढने के लिए की गई कार्रवाई से बढकर उन लोगों पर अमानवीय प्रहार की घटनाओं की संख्या ही बढी हो गई है। इससे व्यवस्था पर प्रश्न चिन्ह निश्चय ही लग सकता है।

जाँच आयोगों, विभिन्न पंचायतों की कार्रवाहियों से जितना कुछ आदिवासियों का हित हो पाता, वह सरकारी नीतियों, आदेशों, कानूनों के अधीन ही हो पाता है। जब नीति गलत है तो उसका परिणाम भी गलत ही होता है। उल्टी नीति से सीधी राह, कही भी देखी नहीं जा सकती। हाँ, अदालतों की ओर होता है और इन्हीं के अधीन ही सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा अंतिम फैसले तय होते हैं, मगर सबसे बड़ी विडंबना तो तमाम आदलती कार्यवाहियों में काफी लंबा समय लग ही रहा है। जहाँ जिस रूप में न्याय होना है, वह समय के द्वारों के बीच खत्म ही हो जाता है। जंगल पर आश्रित, जंगल के उत्पादों को जन-उपयोग के लिए सुलभ बनाने का कौशल, अद्‌भुत क्षमता रखनेवाले आदिवासियों की

रोजी-रोटी के लिए जहाँ सरकारी कानूनों की वजह से समस्या उत्पन्नन हुई है, उसके तहत इन आदिवासियों की परंपरागत जीविका पाने की गतिविधोयों को अपराधिक मानने की जो अद्यतन प्रवृत्ति है, वह कभी क्रूर व घातक प्रतिक्रियात्मक नहीं होनी चाहिए । कानून कागजों की संपत्ति बन जाती है, मगर जंगल पर आश्रित इन्सानों के कानों तक उसे पहुँचाने में भी आज की सूचना-क्रांति भी असफल है, ऐसे में जंगलवासियों, जंगलआश्रितों की रोजी की समस्याओं की मूलआवाजों की नजरंदाजी निष्ठुर है । इनसायित की रक्षा के बिना यदि कोई भी शासन-व्यवस्था है, वह निरर्थक है। शासन द्वारा प्रदत्त अधिकार खुली हत्याएं करने के लिए नहीं होने चाहिए । मृत्यदंड को लेकर हमारे यहाँ बहसें अधूरी रह गई हैं, इन्हें तुरन्त आगे बढाने और मृत्यु दंड को हटाने के पक्ष में सोचने की बड़ी जरूरत है, तब जाकर कहीं अधिकार प्राप्त वर्गों में उनकी अधिकारिक कार्रवाईयों में किसी बहाने हत्या करने का अधिकार पर उन्हें सोचने के लिए विवश होना पडेगा।

जंगलों पर आश्रित आदिवासी वर्ग की रोजी-रोटी के लिए हमें जरूर दृढ फैसले करने की जरूरत है। जब तक यह नहीं कर सकते हैं, तब तक जंगलों के उत्पादों पर हाथ लगाने वाले आदिवासियों को अपराधी घोषित करना, उनकी वृत्तियों को अपराधिक घोषित करना, उन पर जुलुम आदि पर रोक लगना चाहिए। शोषाचलम जैसी घटनाओं में अधिकांश निचले स्तर के ही लोग फंस जाते हैं,कानून के बड़े हाथ उन बड़े तस्करों, उन्हें बचानेवालों तक पहुँचकर सच्चा न्याय समय हो जाता है, तभी आम लोगों का, व्यवस्था पर विश्वास बढ सकता है। जरूरी इस बात कि उन बडें तस्करों, उनसे जुड़े नेता लोगों की तुरंत पर्दाफाश होना चाहिए। टीआरपी की होड़ में लगी मीडिया को बार-बार एक ही दृश्य को दिखाते हुए समय गंवाने की जगह, सबूतों सहित खोजी पत्रकारिता की क्षमता साबिता करने की ज़रूरत है। इनसानियत के विरूद्ध खतरे का डटकर प्रतिरोध होना चाहिए । बंदूक गोलियाँ केवल मारना जानती हैं जबकि जंगल तो सह-जीवन का हरा-भरा संदेश कहलाता है। जियो और जीने दो का हम दृढता से पालन करें । कानून मारक न हो, जीवीट हो। इनसानियत की रक्षा का दायित्व शासन के पास सुनिर्धारित हो । गैर-इनसानियत और गैर-सामाजिक ताकतों को सबक सिखाने में विफल गोलियाँ मासूमों को दाग रही हैं, यह अफसोस की बात है। जिंदगी और इनसानियत पर विश्वास रखने वाले हर इनसान को इस दिशा में आवाज बुलंद करने की जरूरत है। यह आवाज़ केवल कर्कष, निरर्थक आवाज न बने, उन आदिवासियों की रोजी-रोटी को सुलभ बनाकर जीवन के अर्थ सार्थक बना दें ।

मई दिवस (1 मई), आंतर भारती दिवस (10 मई) की हार्दिक शुभकामनाओं सहित....

-डॉ.सी.जय शंकर बाबु

आपुलें मरण पाहिलें म्यां डोळां

आपुलें मरण पाहिलें म्यां डोळां । तो जाला सोहळा अनुपम्य ।।ध्रु।।
आनंदे दाटलीं तिन्ही त्रिभुवनें । सर्वात्मकपणें भोग जाला ।।१।।
एकदेशीं होतों अहंकारें आथिला । त्याच्या त्यागें जाला सुकाळ हा ।।२।।
फिटलें सुतक जन्ममरणाचें । मी माझ्या संकोचें दुरी जालों ।।३।।
नारायणें दिला वसतीस ठाव । ठेवुनियां भाव ठेलों पायीं ।।४।।
तुका म्हणे दिलें उमटूनि जगीं । घेतलें तें अंगीं लावूनियां ।।५।।

English Translation

I have seen my death with my own eyes!
Apulen marana paahilen myaa dola

I have seen my death with my own eyes!
That was an incomparable celebration indeed!
With joy and bliss spread all over,
I experienced oneness with the universe!

I was once selfish, in and out.
I am experiencing divine joy, after giving up selfishness.
I am free from the cycle of birth and death.
I am free from all bondage.

Narayana 1 has sheltered me at his sacred feet.
This is the ultimate experience and destination!
Says TUKA, He has accepted me as His own,
After having taken me out of this world

English : D.S.VAJRAM
3, Praram Lakaki Rasta, Pune - 411 016

1.God Vithala

आंतर भारती - 2

महात्मा बसवेश्वर वचन

–डॉ.इरेश स्वामी

कन्नड वचन

चकोरंगे चंद्रमना बेळगिना चिंते
अंबुज के भानुविन उदगद चिंते
भ्रमरंगे पश्मिळद बंडुंब चिंते
यनगे नम्म कुडल संगमदेवन नेनेव चिंते

हिन्दी काव्यानुवाद

चक्रवाक को चंद्रोदय की चिंता
अंबुज को सूर्योदय की चिंता
भ्रमर को फूलों के परिमल की चिंता
मुझे कूडल संगमदेव के सिमरन की चिंता

सारांश :
इस संसार में हर किसी को किसी न किसी बात की चिंता लगी रहती है । उनपर एक पागलपन सवार होता है । चक्रवाक, कहते हैं कि चांदनी चुगकर उसीपर जीवित रहता है । कमल के फूल सूर्य के उदय के साथ खिलते हैं। भ्रमरों को फुलोंके सुगंध की चिंता रहती है । नहीं उनका जीवन का आधार होता है । इन दृष्टांतों को देकर वे कहते हैं कि उन्हे कूडल संगमनाथ को स्मरण करने की चिंता लगी रहती है ।

–डॉ.इरेश स्वामी

'विद्या' 12 ब्रह्मचैतन्य नगर, सोलापूर– 413 004
0217-2342194, 9371099500

आंतर भारती - 3

धारावाहिक - 39

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिल मूल–संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हायकु अनुवाद – डॉ.सी.जय शंकर बाबु
प्रथम खंड – अरत्तुपाल (धर्म खंड)
इल्लरवियल् (गृहस्थ–धर्म)
अध्याय 8. अन्बुडैमै (प्रेमभाव)

एन्बिलदनै वेयिल् पोलक् कायुमे
अन्बि लदनै अरम् । (कुरल – 77)
धूप में कीटसा,
प्रेम–हीन जले
धर्म–तेज से ।

भावार्थ – जिस भाँति धूप अस्तिहीन कीटादि को झुलसा देती है, उसी भाँति प्रेम–विहीन जन को धर्म का तेज नष्ट कर देता है।

अन्बहत्तिल्ला उयिर् वाळ्क्कै वन्बारकण
वट्रल् मरन्दळित् तरू। (कुरल–78)
मरु–वृक्ष का
फलन; प्रेम–हीन
जीवन व्यर्थ।

भावार्थ – जैसे कि रेगिस्तान के सूखे पेड़ का फलना–फूलना संभव नहीं है, वैसे ही प्रेम–रहित मन में सुख की भावना का उदय संभव नहीं है और वह व्यर्थ भी है।

नयी संस्कृति की खोज करनेवाली प्रयोगशाला

-अमर हबीब

वाहिनी के कार्यकर्ताओं को मोटे तौर पर तीन दलों में विभाजित करके देखा जा सकता है । प्रथम दल, 'युवा शांति सेना' से आये कार्यकर्ताओं का। जे.पी.ने संघर्ष वाहिनी की घोषणा करने के बाद 'तरूण शांति सेना' का विसर्जन किया गया था । संघर्ष वाहिनी का नेतृत्व करनेवालों की कतार में अधिकतर इसी सेना इसी सेना से आये लोग थे । जे.पी.सर्वोदयी, इस कारण इन युवाओं को लगता था कि वे ही जे.पी.की असली संताने हैं । उनका आविर्भाव ऐसा होता था मानो उनका जे.पी.पर विशेष अधिकार है । जे.पी.के कहने का वास्तव अर्थ केवल उन्हें ही समझता है, अन्यों को नहीं, उनके व्यवहार से ऐसा ही दिखायी देता था । दूसरा दल था 'समाजवादी पार्श्वभूमिवाला । गांधी-विनोबा-जयप्रकाश के स्थान पर वे गांधी लोहिया-जयप्रकाश इसी त्रिसूत्री का प्रतिपादन करते थे । जे.पी.मूलतः समाजवादी थे । गलती से भूदान आंदोलन में गये। सर्वोदय के प्रति उनका भ्रम दूर हुआ, इसी कारण उन्होंने संपूर्ण क्रांति की घोषणा की । इस तरह की सोच इस दल के कार्यकर्ताओं की थी। गांधी-लोहिया घोळकर पीनेवाले समाजवादियों को ऐसा लगता था कि 'युवा शांति सेना के कार्यकर्ताओं' को सामाजिक प्रश्नों की समझ नहीं है । वे केवल रचनात्मक कार्य कर सकते हैं । तीसरा दल संख्या की दृष्टि से काफी बडा था लेकिन वे संगठित नहीं थे । ये ऐसे युवा थे जो पहली ही बार किसी सामाजिक कार्य में हिस्सा ले रहे थे । जे.पी.के प्रभाव के कारण आये हुए, बिहार के आंदोलन में शामिल हुए ये युवा, पहले दो तरह के संगठित दलों के कार्यकर्ताओं के सामने कुछ संकोच अनुभव करते थे ।

मेरी पार्श्वभूमि में सेवादल था । उस कारण समाजवादी गुट के मित्रों के लिए मैं करीबी था । सुधाकर जाधव 'युवा शांति सेना' से आया था। वास्तव में मैं समाजवादियों से एक बागी था तो सुधाकर सर्वोदयवादियों में । लेकिन हम दोनों की अच्छी पटती थी । शुरू में शुभमूर्ति राष्ट्रीय संयोजक था । वह भी सर्वोदयी पार्श्वभूमि से था। नये राष्ट्रीय संयोजक के चुनाव के लिए नागपूर में बैठक हुई । तब शुभमूर्ति और सुधाकर जाधव ने मेरे नाम का प्रस्ताव रखा । बैठक में क्या हुआ, किसीको समझा नहीं । लेकिन मेरा चयन हुआ और समाजवादी गुट ने जल्लोश मनाया । सर्वोदयी कार्यकर्ताओं में मायुसी छायी । उस समय चंद्रकान्त वानखेड महाराष्ट्र का संयोजक था । उसने मेरे साथ असहयोग करने की नीति अपनायी । मैं राजनीतिज्ञ हूँ, अतः मैं वाहिनी को गलत रास्ते पर ले जाऊंगा, कइयों ने ऐसा प्रचार करनेवाले पत्रक निकाले । मजेदार बात यह थी कि जिन्होंने प्रचार किया था कि मैं वाहिनी को चुनावी दलदल में घसीटकर ले जाऊंगा, वैसे पत्रक भी निकाले थे, वे तो बाद में चुनावी दंगल में कूद पडे, मैं

नहीं। । सौभाग्य से शुभमभूर्ति और सुधाकर इनसे मेरी गाढी दोस्ती थी। वाहिनी में पैदा हुई कटुता दूर करने की हमने जी जान से कोशिश की। नये लोगों के अर्थात तीसरे दल के हाथों में वाहिनी जाए, ऐसा हमारा प्रयत्न था। लेकिन दुर्भाग्य से उसमें हमें खास सफलता नहीं मिली।

क्या समान पार्श्वभूमिवाले सभी एकदूसरे के साथ गहरे जुडे हुए थे ? वैसा भी नहीं दिखता । शेखर सोनाळकर की पाश्वभूमि समाजवादी थी । लेकिन उससे कितना तो अधिक मेरा सुर सर्वोदयी पार्श्वभूमिवाले सुधाकर से जुड गया था।

वाहिनी यह युवकों का संगठन था जो समाज परिवर्तन का ध्येयवाद माननेवाला था, अपने घर परिवार छोडकर काम करनेवालों का था । इस काम में हर किसीने कही न कही परेशानी झेली थी । ऐसी स्थिति में भी वाहिनी के अन्दर आपस में कडवाहट क्यों थी ? कुछ प्राप्त करना हो तो आपस में होड सकती है । यहां तो अपने लिए कुछ भी प्राप्त करना नहीं था । केवल अपने आपको उजाडना था । फिर क्यों हो ऐसी अनबन? इस प्रश्न का निश्चित उत्तर मैं आज तक भी ढूंढ नहीं सका । मुझे ऐसा लगता है हम सब लोक 'व्यक्ति विशेष' को जपनेवाले थे । अपनी स्वतंत्रता को सर्वोच्च माननेवाले थे । हमारा आस्तित्व यही हमारी पूंजी थी । उसपर आंच आए, हमें स्वीकार नहीं था। हमारे विचारों का आग्रह, यह उन विचारों से अधिक अपने भिन्नता का अविष्कार करनेवाला था । लोकतन्त्र और विचार-स्वातंत्र्य माननेवाले आंदोलन में इस तरह की मुठभेडें शायद इसी कारण होती हों। समाजवादी हो या स्वतंत्रवादी गुटों को इस समस्या पर कोई उपाय सूझा नहीं। उसी तरह हमें भी नहीं ।

वाहिनी के नियम के अनुसार 30 वर्ष की आयु तक ही वाहिनी का सदस्य रहा जा सकता था । इस नियम के अनुसार में **1984** तक ही सदस्य था। लेकिन व्यक्तिगत तौर पर मुझे **1981** में ही, वाहिनी का जो व्यापक कार्य था उससे अलग होना पडा । **1980** में मेरा विवाह हुआ । आपात्काल में जेल में था उसी दरम्यान मेरा आशा से पत्र-परिचय हो चुका था । वह मेरी बहन की, औरंगाबाद में नर्सिंग उपाधि की शिक्षा लेते हुए, सहपाठी थी । आशा का परिवार ख्रिश्चन था । बचपन में ही माँ का साया उठ गया था। पिताजी ने ही संभाला। यह बडी बहन थी । हमने विवाह करने का निश्चय किया। वास्तव में आशा और मैं, हम दोनों का ही था। साफ है यह अन्तर-धर्मीय विवाह था । जहांतक मेरा प्रश्न था, मैं सेवादल, वाहिनी में से होते हुए आया था । विचारों का आधार मेरे पास था। इस कारण मैंने अन्तरधर्मीय विवाह किया। लेकिन आशा ने क्यों किया? वह न तो कभी सेवादल में गयी, न वाहिनी में ।

आशा की प्रेगनन्सी दरम्यान वाहिनी के ही एक सहेली ने ठोक बजाकर कहा था कि तू लगातार आशा के साथ रह। इस कारण मैंने मेरे पंख समेट लिये थे और घर में ही रहने लगा था। आशा के प्रेगनन्सी दरम्यान मैंने काफी कुछ सीखा और बचा हुआ बालसंगोपन दरम्यान।

लेकिन बच्चों के नाम रखते समय मात्र, मुझपर जबरदस्त 'वाहिनी इफेक्ट' था । पहली लड़की हुई। क्या नाम रखें? मैंने काफी सोचा। पहले उन बातों को निश्चित किया

जिन्हें हटा देना था। एक तो पारिभाषिक नाम न हो। उदा. क्रान्ति, समता आदि । दूसरा, ऐतिहासिक पात्रों के नाम न हो-अर्थात शिवाजी, अकबर आदि। क्या चाहिए? प्रकृति के करीब पहुँचेगा ऐसा शब्द ... उच्चार के लिए आसान ... और कम से कम दो भाषाओं में उपयोग में लाया जानेवाला...। मुझे नाम मिला... तरंग। लडकी का नाम रखा तरंग। सुधाकर के लड़के का नाम परिमल, माया सुधाकर, ऐसा था। वाहिनी के कई लोगों ने अपने नाम के आगे माँ-पिता के नाम लगाए थे। उदा. मोहन हिराबाई हिरालाल आदि ये नाम तर्कसंगत थे। हमने भी हमारे बच्चों के नाम ऐसे ही रखे । लडकी का नाम तरंग आशा हबीब और लड़के का सारंग आशा हबीब । शुरु में इसके लिए कुछ विरोध हुआ। बाद में उसे स्वीकारा गया। मॅट्रिक की परीक्षा के वक्त, फॉर्म पर नाम लिखते समय दिक्कत आयी थी । लेकिन बहस के माध्यम से मैंने मार्ग निकाल लिया । हमने हमारे बच्चों के जो नाम रखे थे, उन्हें बच्चों ने भी कायम रखा।

वाहिनी के काम के निमित्त घूमते समय मेरा लिखने और संभाषण का कौशल विकसित हुआ। बाद में यह ध्यान में आया कि पत्रकारिता यह कार्यकर्ता का हथियार है। मैं लगातार लिखता रहा। लिखते रहने का मुझे लाभ मिला । मेरी सोच सुसंगत है या नहीं इसकी मैं जांच कर सका । वाहिनी ने दिया मंत्र 'अपने दिमाग से सोचो' पत्रकारिता में काम आया। इसी कारण 1986 वर्ष के अकाल पर लिखे 'दुष्काळ देशी' (अकाल के देश में) नामक मेरे वार्ता-पत्र, पत्रकारिता की शिक्षा का एक हिस्सा, इस रूप में स्वीकार किए गए । हैदराबाद मुक्तिसंग्राम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले 'दैनिक मराठवाडा' की लातूर आवृत्ति का निवासी संपादक यह जिम्मेदारी मुझे दी गयी थी । कृषक आंदोलन में 'भूमिसेवक' यह साप्ताहिक निकाला उसी तरह 'शेतकरी संगठक' का कार्यकारी संपादक इस रूप में भी मैंने काम किया। 'शेतकरी संगटना' (कृषक संगठन) की अधिकांश स्मरणिकाओं का दायित्व भी मैंने ही निभाया । पत्रकारिता और आंदोलन दोनों का मेल बिठाकर मैं चल सका वह केवल इस कारण कि मेरे वैचारिक पिंड को आकार वाहिनी ने दिया था । समाज के विषय में कुतुहल, नया जान लेने की ललक और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की आन्तरिक तडप अगर होतो आप अच्छे पत्रकार हो सकते हैं । अर्थात अच्छा कार्यकर्ता बनने के लिए भी और क्या चाहिए? कोई एकादा अपवाद छोड दिया तो मैंने पत्रकारिता की नौकरी नहीं की। क्योंकि पत्रकारिता को मैंने जीवनयापन का साधन कभी नहीं माना। उसे केवल संघर्ष का अस्त्र मान लिया था ।

मैं कृषक आंदोलन में शामिल हुआ तब भी मुझे ऐसा बिलकुल नहीं लगा कि मुझे अपनी दिशा बदलनी पडी है। यह स्वाभाविक विस्तार था। वृक्ष को कोपले निकल आए, उस तरह का । मूलतः संघर्ष वाहिनी का आकर्षण ही यह था कि इसमें आपको किसी महात्मा के वचन रटना नही था, किसीने निश्चित किये व्यवहार के मानदंड नहीं थे, किसी प्रेषित ने बिछाया हुआ रास्ता नहीं था । हमारे सामने उपस्थित हुए प्रश्नों के अनुषंग से हमें ही प्रयोग करना था, हमें ही रास्ता ढूंढना था और हमें ही आगे बढना था। यह खुलापन यही हमारे

आकर्षण का केन्द्र था। यही खुलापन कृषक आंदोलन में भी था। कृषक आंदोलन से जुडने के बाद हमारे ध्यान में आया कि हमें अभी काफीकुछ सीखना है। हम आंदोलन में थे तो प्रशिक्षक, लेकिन हमारी भूमिका छात्रों की थी । कुछ नया समझ लेना, नये उपाय ढूंढना, नये कार्यक्रम बनाना, नई चुनौतियों को ललकारना और नई राह पर चलते रहना, वाहिनी की इस शिक्षा को क्रियान्वित करना हमने आगे भी जारी रखा। युवावस्था में हमारे विचारों पर मार्क्सवाद का स्वाभाविक प्रभाव था। वाहिनी में थे उस समय सामाजिक समस्याओं को हाथ में लेने से वह कुछ मर्यादा तक मिट गया था। कृषक आंदोलन में आनेके बाद अर्थशास्त्र में मार्क्सवाद की मर्यादाएँ हमारे लिए स्पष्ट हुईं। विचारों का आकाश विस्तारित हुआ, यह सबसे बडी उपलब्धि थी। हम कुएँ में तैरना सीखें, पोखरे में आनंद लूटा, नदी में तैरते समय कुछ घबराहट हुई लेकिन तैरते गए... मैं वाहिनी से शेतकरी संगठन में आया तो ऐसा लगा मानो विस्तीर्ण नदी के पात्र में पहुँच गया हूँ।

वाहिनी यह, अपने ही जीवन के प्रयोग करनेवाली प्रयोगशाला थी (Experiment with life)। वाहिनी के कार्यकर्ताओं ने जीने के कई प्रयोग किये । कुछ प्रयोग तो अचंभित करनेवाले हैं। वाहिनी के मेरे मित्रों की जीवनशैली देखने पर अचंभित हुए बिना नहीं रहा जाता । एक ने अपने बच्चों को स्कूल ही नहीं भेजा। घर में ही पढ़ाया और परीक्षा दिलवायी। कोई गांव में गया और वहीं बस गया। आदिवासी युवतियों से विवाह किया। अच्छे खासे इंजिनिअर व्यक्ति ने शरीर पर खादी चढाई तो उसे मरने तक नहीं उतारा। किसीने ठेठ बंगाली लड़की से शादी की। कोई मुम्बई के आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न परिवार की लड़की एकदम छोटे गांव में रहने लगी। उसने वहां कृषि को अपनाया, बकरियों को पाला-पोसा, भैंस के दूध का धंदा किया। कई मित्रों ने अपने नाम बदलवा लिये। परंपराओं को धक्का देनेवाले नाम अपनाएं। ऐसे कई उदाहरण दिये जा सकेंगे। इस प्रयोगशाळा में मैंने भी अपने आपपर प्रयोग किये। आज मुडकर जीवन के पटल की ओर देखता हूँ तो हाँ-जहाँ प्रयोग किये उतना हिस्सा उजला दिखता है। मैं सत्ता की ओर नहीं गया, बडा नाम नहीं हुआ, मेरे पास कुबेर की सम्पत्ति नहीं इनमें से किसी भी बात के लिए अफसोस नहीं है। मेरे पास पूरे देश में फैले हुए, जान की बाजी लगा देनेवाले मित्र हैं। मेरे पास जीवन का असामान्य अनुभव है, जो किसी भी बडे सत्ताधीश या कुबेर के पास भी नहीं है। इसीका मुझे अभिमान है। वाहिनी ने जो दिया वह यही ।

अनुवादक - ज्योतिराव लढके
चेतस, 22, बाजीप्रभू नगर, नागपूर-440033

'धुनी तरुणाई'
संपादक : मिलिन्द बोकील और अमर हबीब
पृष्ठ : 160, कीमत : 150 रूपये
प्रकाशक : परिसर प्रकाशन, अंबेजोगाई - 431 517

काव्य भारती - 1

आखिर क्यों

–श्रीमती कुन्ती

संबधों की स्वतंत्रता
के नाम पर
आखिर क्यों
छली जाती है
हर बार स्त्री ही?
बड़े प्यार से पूछते हो
पुटयाकर
बीते संबंध
फिर ढोते हो उनकी लाश ताउम्र
जबकि भूल चुकी होती हैं
उन्हें सिरे से स्त्रियाँ।

गोमती सदन, लहरर्गिद रोड, पंचायत भवन के पास, झांसी (उ.प्र.)

काव्य भारती - 2

''वंदेमातरम्''

–डॉ.प्रेमसिंह चेतन

शहीदों का जोश
अखण्डता एकता
का आहवान
''वंदेमातरम्''

शताब्दी का जश्न,
मना रहा अब
मिला जुला यह
मेरा हिन्दुस्तान

परास्त होकर
सोई थी सियासी
जागी हार का
लिए सवाल

मचा सर्वत्र
इसका बवाल
लोकतंत्र में
बना मरवौल।

मिला बहाना उन्हें
जिन्हें कोई श्रद्धा
भावना का मूल्य
का पता नहीं

धरती माँ जननी
हिन्दुस्तान की के ममत्व
का कि ''वंदेमातरम्''
किस की है।

-: श्री रंग सोसायटी रूम नं. १४, श्री गणेश नगर (पंचकुटीर पवई मुंबई - ७६)

विशेष आलेख - 1

जादू-टोना, टोटका, भानामती, भूत लगना, समझ गैर समझ

– माधव बावगे

मराठवाडा में जादूटोना, भानामती, टोटका ये शब्द कहते ही मजेदार जोश आता है कारण छोटे बच्चें से वयस्कर व्यक्तियों तक सबके कान में ये शब्द गए हुए होते हैं, नहीं नहीं सो भयंकर प्रकार चलते हैं, चलाए जाते हैं, मैने प्रत्यक्ष देखा है कि ऐसा दावा किया जाता है, जादूगरी टोटका तो होती ही है यदि कोई करता है कोई उतारता ऐसी एक पक्की समझ है मैं जादू टोना करता हूँ ऐसा कोई नहीं कहता पर मैं जादूटोना उतारना जानता हूँ ऐसा कहनेवाले दो चार गांवों में एकाध तो होता ही है।

जादू की समझ–ग्रामीण भाग में जादू होता है, जादू करना अर्थात भैंस का दूध देना बन्द होना, दूध नमकीन लगना, एक खलिहान का अनाज दूसरे खलिहान में पहुंच जाता है, यह किसी व्यक्तिद्वारा किया जाता है ऐसी समझ है।

भानामती की परम्परागत समझ–अपने पास भानामती होती है घर पर पत्थर गिरने लगते हैं, शरीर पर भिलावां के बीज गिरता है। रातको भोजन में राख, मुंह से कंकर, सुई निकलती है घिग्घी बंधती है। औरती घूमने लगती हैं, न समझमें आने वाली भाषा में संवाद करती है। शरीर में सुइयां चुभोई जाती हैं, ठूंठ होकर गिर जाते हैं, सरसर पेड़ पर चढकर छोटी टहनी पर लटकता है, छोटे से देवल में बैठना, बालों से छत पर टंग जाते हैं। विकराळ रूप धारण करते है। वह 5–10 आदिवासीयों से संभलता नहीं, सिर के बाल अपने आप कट जाते हैं। कपड़े अपने आप फट जाते हैं, बन्द अलमारी में से कपडे फट जाते हैं, जल जाते है इस तरह कई प्रकार होते हैं और हमारे मराठवाडा की स्पेशल भानामती है जिसमें स्त्रियों के शरीर में देवी आती है और वह घूमने लगती है, शरीर पर धारण किए हुए कपडों की भी होश नहीं रहती, यह सिर्फ मराठवाडा में ही नही अपितु आन्ध्र, कर्नाटक के सीमा भाग अर्थात लातूर, नांदेड, परभणी, हिंगोली, बीड, उस्मानाबाद आदि जिलों में यह प्रमाण ज्यादा है।

समझो कि ऐसा है कि भानामती करने वाला कोई है, तो वह बंगाल में जाकर आया है, यह काली विद्या, बंगाली विद्या सीख कर आया है। वह गांव में आकर सोमवती अमावस्या की रात तेरह के बाद नग्नावस्था में स्मशान जाता है और हाथ पैर की हड्डियों के टुकड़े लेता है, सिर की खोपडी लेता है उसके पास काली सफेद गुड़िया होती है, सूआ, थिलावा, नींबू, हरा लाल कपडा, काला कपडा होता है? अपने गांव में नई शादी होकर गौना करके आई हुई लड़कियां कौन है? उनकी साड़ी का, चूड़ी का टुकड़ा, सिर के

बाल, पांव के नीचे की मिट्टी वह स्वयं या दूसरों के माध्यम से मंगवा लेता है। किसी कुटिया में दांव सजाता है और यह प्राप्त किया हुआ सामान उसके पास की गुड़ियाँ को पास रखकर अपनी विद्या शुरु करता है और फिर वह उस गुड़िया से जैसा चाहे करवा कर उस औरत के नाम से जैसा चाहे वैसा करवाता है, उस औरत को उसके घरमें वैसा ही होने लगता है, अगर गुड़ियाको सूई चुभोना शुरु किया तो जिस औरत के नाम से वह किया जाता है उस औरत को सूइयां चुभने जैसा लगता है, इसने अगर गुड़िया को मरोड़ा तो जिस औरत के नाम से किया जाता है वह और आड़ी तेड़ी होकर घर में लोटने लगती है। अगर उन्होंने यह गुड़िया देवालय में रख दी तो वह औरत भी देवालय में बैठती है। गुड़िया अगर वृक्ष की डाल पर रख दी तो वह स्त्री भी सरसर पेड़ पर चढती है और एकदम छोटी डाली पर बैठती है। ''मैंने देखा' ऐसा ही लोग कहते हैं'

ऐसी औरतों को जानकार (साधू, बाबा मांत्रिक ओझा) को दिखाते हैं। जानकार कहता है कि इस पर किसी जादू या भानामती है इसे जिसने भानामती की है उसका नाम उसीसे कहलवाता है, उसके नाम में आंखों में नींबू निचोड़ा जाता है, उसे छड़ी से मारा जाता है। (अलग अलग बाबाओं के अलग अलग ढंग होते है) समझ ऐसी है कि अगर उसे मांत्रिक ने मारा तो मार उस औरत को नहीं लगती अपितु जिस मांत्रिक ने भानामती की उसे लगती है। इसलिए वह नाम लेती है, बाबा का कहना उसने सुना था कि भानामती किसने की है इसलिए उसका नाम इस के मुंह से कहलवाते है। इसलिए अब किसी का तो नाम लिए छुटकारा मिलेगा नहीं ऐसा उसे लगता है। इसलिए उसका नाम लिया। नाम सरपंच, पोलिस पाटील, तहसीलदार गांव के प्रतिष्ठित व्यक्ति के नहीं लिए जाते पर गांव के किसी अल्पसंख्यांक दलित, आदिवासी, मछियारा, बागबान, जुलाह, चमार, कुम्हार स्वामी, महिला या जिस घर से अपना वैमनस्य है उस घर के व्यक्ति के नाम लिया जाता है, फिर उसका नाम जाहिर होता है । ''नाव फुटले, नाव फुटले'' ऐसा कहते है। जिसके घर में भानामती होती है उस घर के लोग डंडा, कुल्हाड़ी लेकर जिसका नाम लिया था उसके घर जाते हैं, उसके घर पर सामूहिक हल्ला बोल कर उस व्यक्ति के हाथ पैर तोडते हैं, घर के गांव से निष्कासित करके उसका जीना कठिन कर देते हैं। सारा गांव एक तरफ होता है और जिसका नाम लिया था वह एकतरफ होता है। या खून कर देते हैं इस वजह से कई परिवारों का संसार उध्वस्त हुआ है होता है। आर्थिक लूट भी होती है, घर पर दरिद्री का कुहराम मचता है। साधू, बाबा लोगों से ऐसे कुटुम्बों से आर्थिक, मानसिक तौर पर स्त्री के लैंगिक शोषण भी होते हैं।

भानामती की कारण मीमांसा–जिस घर में भानामती है उस घर का वातावरण उसके लिए जिम्मेदार होता है। वस्तुस्थिति यह होती है कि, असफल, तिरस्कृत, अपयश वाले व्यक्ति ज्यादातर इस भानामती के पीछे होते हैं, इस विफलता

तथा अपयश सहन करने की ताकत उस व्यक्ति में नहीं होती ये अपयश हरबार उस व्यक्ति की गलती की वजह से होता है ऐसा नहीं है, इसलिए लोगों का ध्यान आकर्षित करने के लिए हम कितने कष्ट में है यह दिखाकर उनकी सहानुभूति मिले, यह भावना स्वाभाविक होने पर भी जो तरीका अपनाया है यह विकृत है। ऐसा व्यक्ति ज्यादा तर मानसिक दृष्टि से (सायकॉलॉजीकली) माल एडजेस्टेड या विकृत (ॲबनॉर्मल) होने से उस उस स्वरूप का मार्ग अपनाते हैं। अपने पास भानामती विशेषकर किस को होती है स्त्रियों को या पुरुषों को ? उत्तर आता है स्त्रियों को भानामती होती है, हमारा कहना है कि स्त्री को भानामती नहीं होनी चाहिए कारण स्त्रियां नित्य नियम से देवी देवताओं की पूजा करती हैं, मनौती मांगती है, पूरी करती हैं, वृत वैकल्प करती हैं उसका उद्यापन करती हैं, इतना करने के बाद भी भानामती उन्हे क्यों होती है ? इस के विपरीत पुरुष ऐसा कुछ भी नहीं करते इसलिए पुरुषों को भानामती होनी चाहिए पर औरतों को ही भानामती होती है इसका कारण ढूंढने का प्रयत्न किया तो पता चला स्त्रियों को घर में क्या स्थान है। उत्तर आता है दूसरे दर्जे का, हमारा कहना ऐसा है कि, दूसरे दर्जे का होता तो भी ठीक है। परन्तु वस्तुस्थिति ऐसी है कि अधिकांश जगह पैरो की जूती की कीमत देते हैं पर घर की औरत को नही जहाँ जहाँ ऐसा होता है वहाँ वहाँ भानामती होती है, इतना ही नहीं भानामती करने के पीछे सरसरी तौर पर आगे बताए हुए कुछ कारण होते हैं। घर में पति, सास, ससुर नन्द, भाभी का होने वाला क्लेश पति पसन्द न हो, पति व्यसनी हो, पति व्यभिचारी हो तो, घर से अलग होना हो तो, काम जीवन की भावना पूरी न होती हो तो, या भानामती ग्रस्त महिला के दूसरों से सम्बन्ध हों तो, घर में काम का बोझ उसपर बढ जाने पर, शहरी वातावरण में पली कन्या ग्रामीण भाग में दी जाए और घर का वातावरण मुक्त न हो तो, घर में स्त्री का दुय्यम स्थान, उसकी भावना, मन न समझें तो, उसकी इच्छा के विरूद्ध ही हो रहा हो तो ऐसी आकांक्षाएं पूरी न हो रही हो तो, उसके मन को बुरी लगे ऐसा कोई बोले तो, अपवाद में कभी कोई कारण न होने पर भी ऐसा प्रकार होने की संभावना है । ऊपर बताए तकलीफ देय कारणा की पुनरावृत्ती होने लगी कि वह महिला हाथ से माथे का कुमकुम फैलाती है। बाल खुले छोड़ती है और दोनों हाथ पे हाथ पकड़ कर घुमाने लगती है। फिर क्या होता है? ससुर, घर के सब सदस्य पैर छूते हैं। फिर उसे लगता है कि यह मार्ग जरा अच्छा है कारण होने वाला कष्ट कम हो गया है और सब लोग पैर छू रहे हैं मतलब प्रतिष्ठा मिल रही है और संस्कार कहते हैं कि अमावस्या पूर्णिमा को भूत लगता है। इसलिए अमावस्या पूर्णिमा को भूत लगने के प्रकार ज्यादा दीखते है। वास्तव में अमावस्या पूर्णिमा का भूत लगने का कोई सम्बध नहीं यह 'अंनिस' सिद्ध करके बताता है।

अमावस्या पूर्णिमा को जिसको व्यक्ति को भूत लगता है या भानामति होती है ऐसे व्यक्ति को कुछ दिन शहर में रखें, घर में अमावस्या तथा पूर्णिमा कौन से दिन है

इसकी चर्चा उसके सामने न करें, इससे अमावस्या पूर्णिमा कौन से दिन है पता नहीं हो भूत नहीं लगता भानामती नहीं होगी, यह भूत लगता संस्कृति संबंधी बीमारी है, या सममानसिक बीमारी है, कई बार तो ढोंग का तरीका होता है। कुल मिलाकर भानामती अर्थात उसके मन के अंदर की सुप्त भावनाओं का उद्रेक होता है। जैसे बांध टूटे नहीं इसलिए अधिक पानी बह जाने के लिए बांध की नहर होती है वैसा ही स्त्रियों की मन की भावनाओं का इस मार्ग से निकास होता है। दैनंदिन जीवन की अपेक्षा वह व्यक्ति दुसरा व्यवहार करता है। बोलचाल में फरक दिखता है। उसे हम भानामती कहते हैं।

भानामती के बारे में 'अंनिस' का निष्कर्ष :- महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति ने गहन अभ्यास करके यह निष्कर्ष निकाला है कि जादू टोना, भानामती, भूत का इस संसार में अस्तित्व ही नहीं है। जादू टोना, भानामती कोई कर ही नहीं सकता... अगर कोई ऐसा जादू भानामती करने का दावा कर सकता है तो उसे समिती के 21 लाख की सार्वजनिक घोषणा है। उन्होंने समिति की महिला, कुरुब कार्यकर्ताओं पर भानामती करके दिखाया। भानामति करने वाले बाबा को पाकिस्तान के सीमा पर बिठाया जाएगा घुसखोर आते ही उन्हें भानामती करके देश के संरक्षण करें। या कोई अतिरेकी समुद्रमार्ग से आए और रेल्वेस्टेशन हॉटेल, दवाखाना ऐसे सार्वजनिक स्थानों पर भानामती करनेवाले को बिठाए उसे भरपूर वेतन देंगे ऐसा भानामती करने वाले अतिरेकी अमानवीय कार्य करनेवालों पर भानामती करें, परन्तु आज तक यह आहवान किसी ने भी स्वीकारा नहीं। ऐसा कुछ भी हो सकता नहीं और दिमाग में बैठे भानामती जाती नहीं यह समाज की दोहरी घातक भूमिका है।

राज्य कार्यकारी समिति
महाराष्ट्र अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति अभियान, लातूर

समय कह रहा है।
समविचारी जागरुक नागरिको! एकजुट होकर मानवमात्र के कल्याण कार्य में सक्रिय हों!

चिंतन भारती - 1

सजग राजनीतिज्ञ बनें! -विलास वाघ

''बाबासाहब ने आंदोलन का यहाँ तक लाया हुआ छकड़ा आज कहाँ है?''

ऐसा प्रश्न पूछने पर ठीक उत्तर दिया नहीं जा सकता ऐसी अवस्था इस आंदोलन की है। दलित समाज में तुलना से देखें तो शिक्षितों की, अच्छी स्थिति वालों की संख्या बढ़ गई है। पर उनका बाबा साहब के आंदोलन के लिए लेकर जाने का क्या लाभ था, यूं कहें कि प्रश्नों के उत्तर निराशाजनक होंगे यह स्पष्ट है।

सहूलियतों का उपयोग करके अनेकों ने अपना उद्धार कर लिया, पर इसका प्रमाण बहुत थोडा है। अभी भी बहुसंख्यांक दलित, आदिवासी, भटके विमुक्त पहले जैसा जीवन जी रहे हैं। उनकी दरिद्रता, निरक्षरता, अंधश्रद्धा जैसी थी वैसी ही है। सुशिक्षित दलितोंने उनके प्रश्न का हल निकलने के लिए आगे आना चाहिए पर ऐसा होता हुआ नहीं दीख रहा। सरकारी योजनाओं से भी उनका बहुत सुधार नहीं हो सकता, योजनाओं का पैसा गायब हो जाता है यह अनुभवों द्वारा प्रमाणित है।

साधारण जनता के विकास के लिए क्या करना चाहिए? जनता को एकत्रित करना होगा, उनमें स्वाभिमान जागृत करना होगा, अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए संघर्ष करने की शक्ति निर्माण करनी होगी, अपनी समस्याएँ क्या हैं? वे क्यों उत्पन्न हुईं? अपनी गरीबी के लिए कौन जिम्मेदार है? हम निरक्षर क्यों रह गए? अपनी गरीबी के लिए कौन जिम्मेदार है? हम निरक्षर क्यों रह गए? इन प्रश्नों के उत्तर ढूंढने पड़ेंगे। पर उनमें से नेता निर्माण कराना होगा। इसलिए बाबासाहब ने ''संघर्ष करो' यह संदेश हमें दिया है।

अपने देश की जनता की समस्याएँ संघर्ष के बिना हल नहीं होगी यह हमारा अनुभव है। बाबासाहब को भी दलितों की समस्याएँ हल करने के लिए संघर्ष करना पड़ा मजेदार तळ्याचा सत्याग्रह, काळा राम मंदिर सत्याग्रह यह उनके महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं। संघर्ष के लिए जनता की एकता निर्माण करनी जरूरी है। जनता के प्रश्न जनता ही हल करें यह नीति होनी चाहिए। जनता का प्रबोधन करना चाहिए उसके लिए पूरे समय के कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। पैसों की भी आवश्यकता है। इसलिए मध्यवर्ती संघटना बनानी चाहिए। बाबा साहब ने सत्ताधारी जमात बने ऐसा संदेश अपने अनुयायियों को दिया था, अपने हाथ में सत्ता आए बिना अपनी समस्याएँ हल नहीं होंगी ऐसा बाबासाहब ने दृढता से कहा, परन्तु बाबा के अनुयायी सत्ता लेने में यशस्वी नहीं हो सके, सत्ता प्राप्त करने के लिए भीख मांगते हैं। हम संख्या में कम हैं इसलिए चुनाव में समझौता करने में हरकत नहीं

ऐसा बाबासाहब का मत था। परन्तु यह समझौता हमारी शर्तोपर होना चाहिए ऐसा बाबासाहब कहते थे। सत्ता ही हाथ में नहीं होगी तो हम किस आधार पर दलितों की समस्याएँ हल करेंगे? जनता की समस्या हल करने के लिए अपने हाथ में कुछ भी नही है।

बाबासाहब के राजकीय धोरण क्या थे? उनके राजकीय तत्वज्ञान क्या थे? उनकी राजकीय विचारधारा क्या थी? अपने राजकीय दोस्त कौन होने चाहिए? यह सब हम भूल गए हैं। या हमने जानबूझकर दुर्लक्ष किया है। हिन्दुत्ववादी प्रतिगामी विचार प्रणाली की तरफ बाबासाहब मुड़े नहीं पर उनके राजकीय अनुयायी आज जातिवादी, हिन्दुत्ववादी, पक्षों से राजकीय मित्रता करते हैं। वे बाबासाहब का राजकीय पराभव करते हैं।

हम बौद्ध होते हुए भी हिन्दु मानसिकता में जी रहे हैं। हिन्दुओं के त्योहार हम में से कुछ लोग आज भी मनाते है। उनमें बौद्ध संस्कृति निर्माण करनी है। हिन्दु त्योहारों का आधार विषमता है। हिन्दु त्योहारों ने स्त्रियों का दर्जा नीचे रखा है। कुछ त्योहार जाति के हैं। सारा भारत बौद्धमय करने की अपनी जिम्मेवारी है उसके लिए हम कुछ करते नहीं, उसके लिए कई कार्यक्रम नहीं चलाते, यह खेद की बात है। धम्मप्रचार का वेग हमें बढाना चाहिए।

अपने देश में जबतक जातिप्रथा है तबतक सुधारणा का वेग कम रहनेवाला होगा अन्य देशों की तुलना में हमने खूब कम प्रगति की है। इसका कारण जातिप्रथा है, जातिप्रथा की वजह से हमारी अपरिमित हानि हुई है। सबने अपनी जाति भूलकर, एकत्रित होकर व्यवस्था के विरूद्ध आवाज उठानी चाहिए, धर्मग्रन्थ पुराण, दकियानूसी प्रथा, काल बाह्य रूढी परम्परा, अंध श्रद्धा से समाज पगला गया है। हमने अभी भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया नहीं। शिक्षित लोग भी जादू टोना अंधश्रद्धा पालते हैं।

सही कहें तो इस पर बौद्ध धर्म एक प्रभावी उपाय है। बाबासाहब के अनुयायी ही बौद्ध धर्म का हूबहू आचरण नहीं करते सर्वत्र बौद्ध धर्म का आचरण बढ जाए तो अपने देश में सामाजिक सुधार का वेग बढ जाएगा। उसके लिए धर्म प्रचार का नियोजनबद्ध कार्यक्रम बनाना चाहिए।

आज कि राजकारण हमारे हाथ से गए जैसा है, नया राजकीय संघटन बनाने की आवश्यकता है। रिपब्लिकन पक्ष एक ही जाति का पक्ष यह तस्वीर मिटानी होगी बौद्ध धर्म अर्थात एक ही जाति का धर्म ऐसी प्रतिमा बनी हुई है। हमारे पास हर बात को जाति की गन्ध होती है। इसलिए कोई भी संघटन मजबूत नहीं होता कोई भी कार्यक्रम यशस्वी नहीं होता, रिपब्लिकन पक्ष अर्थात सत्ताधारियों के इस्तेमाल की चीज बन गई है।

कुछ भी हो, हमें सत्ताधारी बनना चाहिए। जो बाबासाहब का स्वप्न था वह हमने हमने पूरा करना चाहिए। अब तत्वनिष्ठ राजकारण एक इतिहास बन गया है। नहीं तो

भाजप-शिवसेना से अपने नेताओंने युति की ही न होती। कोई भी पक्ष जनता के हित को ध्यान में रखता दीख नहीं रहा। राजकारण करते समय जनता के हित को दुर्लक्ष करके चलेगा नहीं। आज सही लोकतंत्र हमें दिखता नहीं। मंत्री, बड़ेबडे नेता भ्रष्टाचार में फंसे हुए हैं। कुछ जेल में हैं। ऐसी स्थिति पहले अपने देशमें नहीं थी।

इसपर उपाय है राज्य घटना प्रामाणिकता से चलाएँ। यह एक ही तथा अचूक पर्याय आज अपने सामने बचा है। इसके लिए सजग राजनीतिज्ञ बनने की आवश्यकता है।

हिन्दी प्रस्तुति-डॉ.मधुश्री आर्य

चिंतन भारती - 2

श्रद्धांजलि

कॉम्रेड गोविन्दराव पानसरे की हत्या प्रगतिशीलता तथा सहिष्णुता पर धोखादाई हल्ला

भारतीय कम्युनिस्ट दल के ज्येष्ठ नेता, महाराष्ट्र के प्रगतिशील आंदोलन के आधारस्तम्भ कॉम्रेड गोविंदराव पानसरे तथा उनकी पत्नी उमाताई पानसरे पर 16 फरवरी को खूनी हल्ला और 82 वर्ष की आयुमें जीवनमृत्यु के संघर्ष मे 20 फरवरी को फेफडों से रक्तस्त्राव की वजह से कॉम्रेड गोविन्दराव पानसरे की मृत्यु की घटना केवल प्रगतिशील आंदोलन ही नहीं तो महाराष्ट्र देशभर के किसी भी संवेदनशील नागरिक को थरथराने वाली है। ठीक डेढ साल पहले महाराष्ट्र पूना में डॉ.नरेन्द्र दाभोलकर की जिस प्रकार हत्या की गई उसी पद्धतीसे यह हत्या की गई। डॉ.दाभोलकर की हत्या की जांच में पुलिस और सरकार ने जो अक्षम्य देरी और ढिलाई दिखाई उससे इस हत्या के पीछे की प्रवृत्ति को अनैतिक बल मिला है। ऐसा कहना पड़ेगा।

कॉ.पानसरे ये गरीब श्रमिकों के नेता थे। किसान खेतमजदूरों से कष्ट करने वाले श्रमिकों तक फेरीवालें से नौकरानी तक सब श्रमिक वर्ग के सच्चे अर्थ मैं 'वकील' होते हैं। न्यायालय में और जनसंघर्ष में भी कार्यकर्ता के आधार होते हैं। सामान्य मनुष्य की आवाज होती है। प्रगतिशील आंदोलन में ही नहीं। अपितु पूरे समाज का एक नैतिक मानबिन्दु था कथनी और करनी में अंतर न रखनेवाले, किसी प्रकार का दिखावा, नेतागिरी, समझौता आदि का स्पर्श तक न था ऐसा उनका चरित्र था, विचार प्रस्तुत करने, लडाई करने में, मुंहतोड जवाब देने में दृढ पानसरे कार्यकर्ताओं के साथ अत्यन्त नम्र थे। उनके लिए स्नेह और ममत्व उनके व्यक्तित्व में झलकता था अत्यंत अध्ययनशील संयमी पर

मजबूत, स्पष्टवक्ता और गरीब मजदूरों के अधिकारों के लिए कटिबद्ध कॉ.गोविन्दराव पानसरे पर का आक्रमण समाज की सत्यशक्ति पर प्रहार है। इसलिए वह अधिक गंभीर है।

मार्क्सवादी विचार परंपरा में भारत ने जातिविवाद की तरफ दुर्लक्ष का आक्षेप किया जाता है। गोविंदराव पानसरे इसके अपवाद थे। भारतीय समाज में जातिव्यवस्था को प्रखरता से प्रस्तुत किया। एक तरफ आर्थिक विषमता तथा उसीके साथ सामाजिक विषमता पर आक्रमण करते हुए अपने जनवादी राजकारण को आगे बढाया। मार्क्स के साथ वे फुले, शाहू, आंबेडकर के ही वारिस थे इस हत्या की जिम्मेदारी अबतक किसी ने स्वीकारी नहीं सच देखा जाए तो इतना आखरी कदम उठाना अर्थात कॉम्रेड पानसरे जीने का अधिकार छीन लाने का इस हत्या के पीछे सूत्रधारो ने आगे आकर बताना चाहिए पर ऐसे आक्रमण हमेशा धोखादाई होते हैं और अपने करनी की जिम्मेदारी स्वीकार करने की हिम्मत भी सूत्रधारों में नहीं होती यह सच्चाई है।

गांधीजी की हत्या का मुकदमा चलने पर उसके कुछ आरोपी निर्दोष छूट गए उस समय सरदार ने एक बोधक बात कही थी। उन्होंने कहा कि प्रत्यक्ष हत्या में सहभागी थे या नहीं उसकी अपेक्षा धार्मिक विद्वेश का वातावरण हिन्दुत्ववादी शक्ति ने तैयार किया था जो गांधीजी की हत्या का कारण बना। डॉ.दाभोलकर और अब कॉम्रेड पानसरे की हत्या की घटना भी इसी तरफ निर्देश कर रही है। डॉ.दाभोलकर अंधश्रद्धा निर्मूलन समिति के माध्यम से विवेकवाद को जागृत कर रहे थे। जनता की परेशानियों, भोलेपन का गैर फायदा उठा कर उसे लूटने वाले ढोंगी बाबा और धर्म, संस्कृति के ठेकेदारों को उनके शत्रु लगे, कॉम्रेड पानसरे भी दृढता से सत्य कहते थे गहन अध्ययन सुस्पष्ट तथा विश्लेषण के आधार पर वे अपना मत बहुत ही प्रभावी तरीके से रखते थे उनकी वाणी और लेखनी से होने वाली स्पष्ट अभिव्यक्ति समता और न्याय के लिए होती थी साथ ही साथ वे दंभ और ढोंग का पर्दाफाश करनेवाली होती थी। स्वाभाविक तथा धार्मिक मूलतत्ववादी और जातीयवादी शक्तियों को वे उनके शत्रु लगते थे 'शिवाजी कौन था' हमेशा कहते समय उन्होंने शिवाजी महाराज का 'गो ब्राह्मणप्रति पालक' और 'मुस्लिम विरोधक' ऐसा हिन्दुत्ववादी प्रतिमा को आव्हान देते हुए, शिवाजी महाराज ये सारी जनता के राजा थे, उनकी राजनीति किसी भी धर्म की विरोधी या जातिविरोधी न होकर तत्कालीन प्रस्थापित जुल्मी सत्ताधारियों के विरूद्ध थी व प्रायः वे समता और न्याय के प्रतीक थे यह उन्होंने साधार प्रस्तुत किया इसलिए धर्मांध शक्ति न चिढती तो अजीब लगता था और अर्वाचीन गोडसे को हीरो कहने के समय में भी कॉ पानसरे ने उसपर कठोर टीक की, गांधी हत्या का समर्थन हो ही नही सकता ऐसी स्पषट भूमिका उन्होंने अपनाई । उसका विरोध करते हुए अधर्म को विद्वेष पर टिक नहीं सकता यह वे कहते थे। निरोगी तथा शान्तिपूर्ण समाज के लिए सहिष्णुता, धर्म निरपेक्षता, समता,

बंधुत्व आदि मूल्य आत्मसात होने की आवश्यकता है वे कहते थे। उनके लेख तथा भाषण उपलब्ध हैं उस पर से समझ सकते हैं। दाभोलकर की हत्या के संदर्भ में ''उनको उनके कर्मो के फल मिले'' ऐसा घमंड से बोलने वाले और पानसरे ये दाभोलकर के मार्ग पर ही जाएँगे ऐसी धमकी देनेवाले एक ही है और उन्हें खुले और छिपे राजकीय समर्थन मिल रहा है। यह हमें ध्यान में लेना होगा इन दिनों कॉम्रेड पानसरे को धमकियां आती थीं। परन्तु ऐसी धमकियों की वे परवा ही नहीं करते थे।

कॉम्रेड पानसरे और डॉ.नरेन्द्र दाभोलकर की हत्या के सूत्र धार ढूंढ कर निकालने चाहिएँ तथा उन्हें जनता के सामने लाना चाहिए अर्थात, दलित हत्याकांड के दोषी न मिलना, मोहसीन की हत्या किसने की इसकी खोज न कर सकने वाले, लोणवली में सात वर्ष की नन्ही का बलात्कार करके निर्घृण खून करनेवाले विकृत खूनी को न पकड़ सकने वाले, डॉ.दाभोलकर के हत्यारों को ढूंढने के लिए 'प्लँचेट' करनेवाली पुलिस व शासन-प्रशासन यंत्रणा से कैसी अपेक्षा करें ?

परन्तु, कॉम्रेड पानसरे की हत्या जिस प्रवृत्ति ने की वह प्रवृत्ति अर्थात पूरा समाज नहीं यह हमें समझना चाहिए बहुसंख्य भारतीय समाज को शान्तिपूर्ण सहजीवन चाहिए यह ध्यान रहे। धर्म को अस्मिता का विषय बनानेवाले, विषमता द्वेष-हिंसा फैलाने वाली शक्ति-फिर वह पूंजीवादी हो या सांप्रदायिक उनको यह समाज आश्रय देने वाला नहीं ।

अब प्रगतिशील आंदोलन में विविध राजकीय पक्ष, संघटना, समाज के विचारशील, संवेदनशील नागरिकों ने चुपी साधनी ठीक नहीं, 'चुप रहना ही हिंसा की शुरूवात है कातिलों में गिने जाने की बात है' यह एक दम सच है। संकुचित धर्मवाद, जातिवाद, असहिष्णुता, हिंसा आदि के विरोध में खड़े रहना होगा, सबने, एक होकर, कॉम्रेड पानसरे की हत्या के बाद गरीब, कष्ट करने वाली जनता के साथ और कार्यकर्ताओं के साथ जो समाज के विशेषतः युवाओं का, संवेदनशील नागरिकों का आक्रोश उभरा उससे आश्वासन मिलता है। समाज के अस्तित्व की, जीने के अधिकार की, शांतिपूर्ण बसेरे की और समता की लड़ाई निर्भयता से तथा एक होकर आगे ले जाना यही कॉम्रेड पानसरे को सच्ची श्रद्धांजली होगी।

कॉम्रेड पानसरे अमर रहे।

हिन्दी अनुवाद
डॉ.मधुश्री आर्य

संपादक
आंदोलन : शाश्वत विकासासाठी

मेळघाट की शिक्षण अवस्था -सि.निम्फा परेरा

पिछले चार वर्षो से मेळघाटी के गाँव-गाँव की जिल्हा परिषद शाला देखकर और वहाँ के बच्चों की शैक्षणिक लापरवाही देखकर मेरा मन सुन्न हो गया। यहाँ आने से पहले मुंबई, पुणे, रत्नागिरी, सावंतवाडी जैसे शहरी भाग में शिक्षिका और तीन शालाओं की मुख्याध्यापिकाएँ मिलकर शिक्षण क्षेत्र के अनुभवों का पिटारा लेकर मैं यहाँ आयी। शहर अंग्रेजी माध्यम की शाला वहाँ के बच्चे, शाला में काम करने की पद्धत, मांबाप के बच्चों की पढाई पर बारिकी से ध्यान, ट्यूशन, ऐसा यहाँ कुछ नहीं दिखता। विदर्भ में जून से शाला शुरू होती है। परन्तु हमारे गांव के पास की आश्रम शाला में 26 जुलाई तक विद्यार्थी जमा नहीं होते । डे.स्कॉलर बच्चे डेढ दो किलो मीटर चलकर शाला को जाते हैं, तब कक्षा में पूरे बच्चे नहीं है कहकर उन्हें व्यवस्थित सिखाया नहीं जाता, वर्षाकाल में नदी नाले लबालब भरे कि शाला से संपर्क टूट जाता है।

सर्व शिक्षा अभियान यह सरकार की नीति बहुत अच्छी है बच्चों को शाला में पुस्तकें, गणवेश, दोपहर की खिचडी, स्कॉलरशिप आदि सब सुविधाएँ मिलती हैं। शिक्षकशाला में उपस्थित हैं परन्तु वे शाला के ऑफिस में काम करने में मग्न रहते हैं। हमारे छात्रावास की लडकियोंके प्रवेश के लिए एकबार मैं नजदीक की शाला में गया था वहाँ के मुख्याध्यापक के पास इस वर्ष पहली की कक्षा है। उन्होंने वह कक्षा अपने कार्यालय के पास में लाई है। चालीस पचास बच्चे पहली बार ही शाला की सीढ़िया चढ़ रहे हैं। उन्हें सिखाने के लिए कोई भी नहीं रहता। ओ मुख्याध्यापक मुझे कहने लगे, ''सिस्टर, यह सरकार हमें सिखाने तथा सिखाने नहीं देती, आज चार शिक्षक अनुपस्थित हैं। शाला में क्लर्क नहीं है, चपरासी नहीं है। मैं अकेला क्या करूँ? मेरी पहली की कक्षा में जाने का समय नही है। बच्चे चिल्ला रहे हैं।''

इस आदिवासी भाग में सारे शिक्षक दूर से ''बदलीपर'' आए हुए होते हैं। यहाँ के गांव के बच्चे अभी डी.एड.होने वाले हैं। शहर से तबादला हुए शिक्षकों को यहाँ देहात अर्थात 'काले पानी' से बड़ी शिक्षा लगती है। इसलिए सप्ताह में चार दिन शाला में और तीन दिन गांव में हमारी शाला के नजदीक की प्राथमिक शालामें चार शिक्षक हैं। दो शिक्षक कक्षाएं संभालते हैं। बाकी के दो गांव में खेती करने गए है। विद्यार्थियों को पढाई का तीन तेरा। ये शिक्षक हमें पूछते है, 'सिस्टर, इस गांव में आप कैसे रहते हैं?' इतनी अच्छी मराठी कैसे बोलते हैं? 'मराठी शाला के बच्चे और इतनी शुद्ध नहीं है'

यहाँ की मराठी शालाके बच्चे और शिक्षक हिन्दी बोलते हैं मैं शाला के मुख्याध्यापकों को पूछी तो वे बोले 'हमारे बच्चे घर में घरेलू भाषा बोलते हैं, गांव में हिन्दी बोलते हैं और शाला में मराठी इतनी छोटी उमर में उन्हें तीन भाषाआं का सामना करना पड़ता है। इसलिए हम उन्हें मराठी भी हिन्दी में सिखाते हैं, यह सब सुन कर मुझे आश्चर्य हुआ। दसवी कें बच्चों को पांच वाक्य शुद्ध मराठी में लिखना पढ़ना नही आता, इंग्रजी, संगणक ये विषय तो उन्हे बहुत कठिन लगते हैं, यहाँ के विद्यार्थी बहुत अच्छे और होशियार हैं। माँ बाप अशिक्षित, दिनभर कठिन श्रम करनेवाले, अगर उन्हें पूछे तो 'आप का बच्चा कौनसी कक्षा में पढता है?' तब तक उनका निश्चित उत्तर होता है 'क्या मालूम' स्कूल को जाता है?

दो समय का भोजन अपने परिवार वालों के पेट में कैसे पड़े इसी की चिन्ता उन्हें सताती रहती है। कंगाली उनकी घुट्टी में पड़ा हुआ है और उसमें बच्चे अधिक, आज के आधुनिक समय में भी हमारे गांव में एक परिवार में आठ लड़कियाँ हैं, तीन चार परिवारों में सात सात लड़कियाँ है। पाँच-छह तो बहुत से परिवारों में दिखती हैं। हमारे गांव में लड़कियाँ ज्यादा हैं यह आनन्द की तथा अभिमान की बात है। भ्रूणहत्या का प्रकार यहाँ पहुँचा ही नहीं है, यह ईश्वर का आभार है, लोग गरीब परन्तु इमानदार, माँगेंगे पर चोरी नहीं करते, सब बच्चों को प्रेम से तथा प्यार से पालते है, बच्चों को शिक्षण देना यह सरकार का काम है, पालकों का नहीं।

'पढाई करने से भी क्या फायदा?' अपने गांव में तो नौकरी नहीं है 'ऐसे पालकों के निराशावादी सुर हमेशा सुनने को मिलते हैं। आजकल पालकों का ध्यान शिक्षण की तरफ जा रहा है।, एक प्रौढ ग्वालिन महिला मेरे पास आई और मुझे कहने लगी 'हमारे मां-बापने हमें जानवरों जैसा काम करने लगाया शाला कहाँ है यह दिखाया ही नहीं,' परन्तु मैं मेरी पोती को आपके हाथ सौंपती हूँ आप इसे स्वीकारों और उसे आपके जैसा बनाएँ।,

पिछले चार वर्षो में हम सिस्टर्सने कारा इस नाम के हमारे गांव में तथा आसपास से दस गांवों में शिक्षण के प्रति रूचि निर्माण की है, गाँव में बच्चे सीखते नहीं हैं। इसलिए अंदाजन दो सौ लडके लड़कियां मेळघाट के बाहर के फादर, सिस्टर्स के मराठी शाला के वसतिगृह में भर्ती किए गए है। इस कारण उन्हें अच्छा आहार अच्छे संस्कार, अच्छा शिक्षण मिलने पर उनका व्यक्तिमत्व विकसित होगा।

इसके अलावा पन्द्रह आदिवासी छोटी लड़कियां के.जी.के लिए साढे तीन वर्षों से हमारे फातिमा कॉन्व्हेंट की बोर्डिंग में रखकर अंग्रेजी माध्यम से शिक्षण ले रही हैं। वहाँ की वरिष्ठ सिस्टर हेजल रूभाव और अन्य तीन सिस्टर्स, ॲनी, स्मिता और ममता इन लड़कियों पर जान से ज्यादा प्रेम करती हुए तीन साल से अच्छा शिक्षण दे रही हैं। ये सुशिक्षित लड़कियां आगे चलकर मेळघाट का नेतृत्व करेंगी ऐसी आशा की किरण हमें दीखती है। अंधेरे को दोष देने की बजाय छोटा सा दिया जलना ज्यादा अच्छा है।

बारहवीं ही पास यहाँ की सत्रह लड़कियों को हमने घोडे गाव, अमरावती और पांचगणी की नर्सिंग के लिए भेजा है। उनमें से पांच लड़कियों ने अपना नर्सिंग कोर्स पूरा करके नौकरी पर लग गई, वे अपने माँ बाप का आर्थिक बोझ हलका कर रही हैं। आरोग्य और समाज कार्य के अलावा गूंगे–बहरे,लंगडे, अंधों को चांदूर बाजार की संस्था में दाखिल कराते हैं।

जिन लड़कियों ने बीच में ही पाठशाला छोड़ दी उन्होने हमारी संस्था में ही सिलाई काम शुरु किया है। उनका सिलाई कोर्स पूरा होने पर उन्हे मशीने देकर उनके उदरनिर्वाह का मार्ग खोल दिया । शामको उन्हे अ,आ,इ,ई सिखाते समय मन में विचार आया कि साठ वर्ष पहले मैने यह पाठ पहली कक्षा में सीखा था अब वही पाठ फिर साठ वर्ष के बाद इन दुर्गम भाग की लड़कियों को सिखाने की सुसंधी ईश्वर ने मुझे इस सेवा निवृत्ति काल में दी है, मै कितनी भाग्यवान हूँ।

आन्तर भारती
(मासिक पत्रिका)
के वार्षिक (रु. एक सौ देकर)
या आजीवन (रु. एक हजार देकर)
ग्राहक बनिए/बनाइए।

निधर्मी होने का अधिकार उच्च न्यायालय का महत्त्वपूर्ण निर्णय

'भारतीय संविधान ने प्रत्येक नागरिक को किसी भी धर्म के पालन करने के साथ साथ कोई भी धर्म न पालते हुए निधर्मी रहने का मूलभूत अधिकार भी बहाल किया है । इसलिए केन्द्र या राज्य सरकार ने किसी को भी किसी भी सरकारी अर्ज में उनके धर्म की टिप्पणी करने की जबरदस्ती न करे, ऐसा महत्त्वपूर्ण आदेश मुंबई उच्च न्यायालयने दिया है । आप कोई भी धर्म नहीं मानते और किसी भी धर्म का अनुसरण नहीं करते, ऐसा कहने का प्रत्येक भारतीय को अधिकार है, ऐसा ही न्यायालयने लिखा है ।

'फुल गॉस्पेल चर्च ऑफ गॉड' नामक संस्था के डॉ.रणजित मोहिते, किशोर नाझरे और सुभाष रनावरे इन तीनों ने जो याचिका दी उसपर न्यायमूर्ति अभय ओक और ए.एस.चांदूरकर के खंडपीठ ने यह महत्त्वपूर्ण निर्णय दिया । इन तीनों ने सरकारी अर्जपर धर्मसंबंधी खाने में 'निधर्मी ऐसा लिखा था, परन्तु उस कारण से उनके अर्ज अस्वीकार कर दिए । इसलिए तीनों ने स्वतंत्र याचिका करते हुए इस विवाद को न्यायालय के सामने लाया था, भारतीय संविधान ने प्रत्येक नागरिक को अपनी इच्छानुसार जीवन जीने और किसी भी धर्म के पालन करने का अधिकार दिया है । भारत निरपेक्ष देश है । इसलिए सरकार का कोई भी धर्म नहीं है । केवल हमें कौनसे धर्म का पालन करना है या नहीं यह निर्धारित करने का अधिकार प्रत्येक नागरिक को दिया हुआ है । इसलिए अमुक एक व्यक्ति ने अमुक एक धर्म का पालन करना चाहिए ऐसा कायदा नहीं कहता । इसके विपरीत दूसरा धर्म स्वीकार करके उसका अनुसरण करने का तथा किसी धर्म के न पालन करते हुए निधर्मी कहलवाने का अधिकार दिया है । ऐसा न्यायालय ने महत्तवपूर्ण निर्णय देते हुए स्पष्ट किया है ।

कुल मिलाकर धर्म का राजकारण और धर्म का बाजार करने के आज के वातावरण में न्यायालय का यह निर्णय अत्यन्त स्वागतार्ह और संविधान के सत्व को स्पष्ट दिखाने वाला है । विशेषतः पुरोगामी नागरिकों को, कार्यकर्ताओं को कई बार दिक्कत का लगने वाला यह धर्म का कॉलम तथा उसकी सख्ती मेंसे युक्ति मिलने की संभावना निर्माण हुई है । धर्म का रवाना सख्ती का होनेसे तथा निधर्मी लिखने की शासकय कार्यालय इजाजत न देने से 'मानवता', 'नास्तिक' ऐसे कुछ पर्याय कई लोग उपयोग में लाते हैं । परन्तु यह रूढार्थ में धर्म के पर्यायी शब्द नहीं है । यह उनको भी मालूम है । अब इस पर्याय को न्यायालय ने ही मान्य करने की वजह से तथा उसे अधोरेखित करने की वजह से आई हुई स्पष्टता का उपयोग एक पुरोगामी कदम रखने में होगा ऐसी आशा करने में आपत्ती नहीं ।

हिन्दी प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री आर्य
आंदोलन से साभार

श्रमर्षी बाबा आमटे राष्ट्रीय एकात्मता राज्यस्तरीय युवा शिविर

(राजर्षि शाहू महाराज पॉलीटेक्नीक, एम.के.टी.कॅम्पस
कोठारी रोड, किनवट जिला नांदेड)

अहवाल : भारत जोड़ो युवा अकादमी द्वारा आयोजित दि. 12 से 16 फरवरी 2015 के बीच हुए इस शिविर के लिए दि. 11 फरवरी से शिविरार्थियों का आगमन शुरु हो गया।

दि. 11 व 12 को महाराष्ट्र के 12 विद्यापीठों के अन्तर्गत 93 महाविद्यालयों से 22 जिलो से 248 लड़के और 102 लड़कियों ने नाम पंजीयन करके सहभाग लिया, संख्यावार इस प्रकार है-11 जिल्हों के 93 महाविद्यालयों से कुल 248 लड़के तथा 102 लड़कियों ने भाग लिया।

शिविर का दैनंदिनी कार्यक्रम प्रातः 6 बजे शिविर गीत, 10 बजे तक श्रमदान 10 से 12 बजे तक नित्यकर्म, 12 से 1.30 बजे तक भोजन दोपहर के 2 से 5 तक बौद्धिक, 4 से 4.30 बजे चाय, 5.30 से 6.30 तक प्रत्यक्ष भेट, 6.30 से 8 बजे तक रात्री का भोजन 8 से 8.30 तक साक्षात्कार 8.30 से 10 बजे तक सांस्कृतिक कार्यक्रम शिविर का प्रारम्भ 12 फरवरी प्रातः 6 बजे शिविर की स्वच्छता श्रमदान करके शुरू हुई।

उद्घाटन : 12 फरवरी प्रातः 10 बजे।
डॉ.विकास आमटे के हाथों और किनवट के विधायक प्रदीप जी नाईक की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर पत्रकार अमर हबीब, भारत जोडो युवा अकादमी के अध्यक्ष डॉ.अशोक बेलखोडे, डॉ.सोमनाथ रोडे, माधव बावगे आदि प्रमुख उपस्थित थे।

दोपहर के बौद्धिक सत्र में लोकमत नागपूर आवृत्ती के संपादक सुरेश द्वादशीवार ने मागदर्शन किया। डॉ.सोमनाथ रोडे ने वक्ताओं का परिचय दिया।

रात्र को शिविरार्थियों का परिचय लिया गया ।

2) शिविर
दिनांक 13 फरवरी – प्रतिदिन जैसा प्रातः 6 बजे शिविर गीत व श्रमदान से शुरुआत, शिविरस्थल की स्वच्छता, किनवट बसस्थानक की स्वच्छता तथा एम.आय.डी.सी. में श्रमदान किया गया। दोपहर के बौद्धिक सत्र में 1) डॉ.सोमनाथ रोडे ने 'बाबांच्या स्वप्नातला युवक' इस विषय पर प्रकाश डाला 2) सामाजिक कार्यकर्ता मोहन हिराबाई हिरालाल ने 'जल, जंगल और जमीन' इस विषय पर विचार प्रस्तुत किए।' र ा त्र ी म ें आनंदवन के अनिकेत और समिक्षा आमटे की प्रत्यक्ष भेट हुई और उसके बाद कवि

सम्मेलन लिया गया जिसमें प्रा.मार्तंड कुलकर्णी तथा शिविरार्थियों ने भाग लिया।
दि.14 फरवरी प्रातः शिवीर गीत तथा श्रमदान
दोपहर को दीपस्तंभ संस्था के संचालक यजुवेंद्र महाजन ने 'करीयर व व्यक्तिमत्त्व विकास' इस विषय पर मार्गदर्शन किया इस समय प्रशासकीय अधिकारी डॉ.राजेन्द्र भारूड, तहसीलदार शिवाजी राठोड, इंजीनीयर प्रशान्त ठमके की विशेष उपस्थिति थी उनके बाद 2) ज्येष्ठ धर्मनिरपेक्षवादी विचारवंत इरफान इंजीनियर ने 'सांप्रदायिक सद्भाव' विषय प्रस्तुत किया रात्री को संतोष गर्जे ने प्रत्यक्ष भेंट दी और उसके बाद, सांस्कृतिक कार्यक्रम में 'किनवट की संस्कृति' के अन्तर्गत उस भाग के आदिवासी, बंजारा तथा मथुटा जाति के लोकनृत्य प्रस्तुत किए गए।

दिनांक 15 प्रातः शिविर गीत होने के बाद प्राकृतिक सौंदर्य दर्शन प्रा.सुरेन्द्र शिंदे, प्रा.सुनिल व्यवहारे ने जंगल की जानकारी देकर पैनगंगा अभ्यारण्य के खरबी का 'जंगलसफर' शिविरार्थियों को कराया।

दोपहर को शिविरार्थियों की गट चर्चा ली गई। राष्ट्रीय एकात्मता, स्त्री-पुरुष समानता, साम्प्रदायिक सद्भाव, पर्यावरण इत्यादि विषयों पर शिविरार्थियों की चर्चा में प्रतिनिधि स्वरूप में उन्होंने अपने विचार सबके सामने रखें।

शाम को भारत जोडो युवा अकादमी जो आयोजक संस्था व संस्था के पदाधिकारियों का परिचय और मुलाकात कराई गई। उसमें डॉ.अशोक बेलखोडे, प्रा.सविता शेट्टे, धर्मराज हल्लाले आदिने शिविरार्थियों से वार्तालाप किया।

रात में शिविरार्थियों का सांस्कृतिक कार्यक्रम लिया गया जिसमें नृत्य, नादक, एकपात्री प्रयोग, मिमीक्री, दोहे, कविता ऐसे अनेक कला के प्रकार प्रस्तुत किए गए।

दिनांक 16 फरवरी- शिविर गीत के बाद किनवट शहर से राष्ट्रीय एकात्मता प्रभात फेरी निकाली गई, प्रा.विजय उपलेंचवार, गणेश पाटील, सविता शेट्टे, प्रा.द्वारकाप्रसाद वायाळ, प्रा.पंजाब शेरे, प्रा.अर्चना वाघमारे, प्रा.प्रज्ञा घोडे वडीकर आदि के साथ डॉ.एस.एन.सुब्बाराव (भाई जी) की प्रमुख उपस्थिति में शहर के प्रमुख रास्तों से नगर परिषद कार्यालय किनवट के प्रांगण में आने के बाद सर्व धर्म प्रार्थना हुई, नगर परिषद की तरफ से भाई जी का नागरी सत्कार किया गया। आगे आयोजक संस्था के साने गुरुजी रुग्णालय व संशोधन केन्द्र में सामुदायिक सद्भाव प्रार्थना हुई और प्रभातफेरी समाप्त हुई।
प्रातः 10 बजे समारोप कार्यक्रम में जेष्ठ गांधी वादी डॉ.एस.एम.सुब्बाराव जीने शिविरार्थियों का मार्गदर्शन किया, उस समय नरेन्द्र वडगावकर ने शिविरार्थियों में से ही कुछ कलाकारों को लेकर 'भारत की सन्तान' यह भारतीय विविध भाषा एवं संस्कृति का

दर्शन कराने वाले नृत्य संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

सब शिविरार्थियों तथा सहकार्यकर्ताओं को प्रमाणपत्र दिए गए शिविर में सहायता करने वाले मान्यवरों में से कुछ का प्रतिनिधि स्वरूप में सत्कार तथा सबका आभार व्यक्त किया गया । शिविरार्थियों ने जाते समय आयोजन समिति का आभार माना तथा ऐसे ही शिविर आगे भी लिए जाए, संभव होतो ज्यादा कालावधि के हों वे और उनमें हम भी शामिल होंगे ऐसी भाव इच्छा व्यक्त करके बिदाई ली।

शिविर की विशेषता

विशेष उपस्थिति : एन.एस.एस के राज्य संपर्क अधिकारी श्री पाबळकर तथा डॉ.डी.डी.पवार, किनवट के गट शिक्षणाधिकारी अरूण कुमार वतनी वकील, भूतपूर्व नगराध्यक्ष इसारखान सरदार खान व के मूर्ती, प्राचार्य, बेंबरेकर, पत्रकार गोकुळ भवरे, मिलिंद सर्पे, प्रदीप वाकोडीकर एवं प्रतिष्ठित नागरिक.

श्रमदान : शिविर की प्रमुख आयोजक संस्था भारत जोडो युवा अकादमी को भविष्य में सामाजिक प्रकल्प के लिए एम.आय.डी.सी. किनवट में मिली 5 एकड़ भूमि की सफाई तथा तार की कंपाऊंड बनाने के लिए पत्थर की खुदाई का काम श्रमदान से शिविरार्थियों ने कर के दिया।

हिन्दी प्रस्तुति
डॉ.मधुश्री आर्य

(छायाचित्र मुख पृष्ठोंपर)

विशेष आलेख - 2

प्रयोगशील 'परंपरा' की आनन्दगाथा

दै.सकाळ प्रतिनिधि

देश में आनंदवन और बाबा आमटे ये नाम न जाननेवाला कदाचित ही कोई व्यक्ति होगा। आनन्दवन और वहाँ के कुष्ठरोगियों पर होनेवाले उपचार के बारे में अब तक बहुत कुछ छप कर आया है। उस संबंध में पुस्तक भी छपी है। केवल आनन्दवन कहने से उतना ही नहीं है। आनन्दवन एक बड़ी प्रयोगशाला है। यहाँ कार्यकर्ता तो तैयार होते ही हैं साथ ही उदरनिर्वाह के लिए विविध उद्योग खोले गए हैं। वो सब भी बिना किसी की सहायता लिए इस परिसर के लोगों नें दी स्वयं सीखकर ही उद्योग शुरु किए हैं। आज आनन्दवन की 600 एकड़ से ज्यादा भूमिपर निवास की जगह छोड़कर अनेक उद्योग चलते हैं। दूधपालन, मत्स्यपालन, सिलाई और प्रिंटिंग प्रेस, कपड़ा बुनाई, भेट कार्ड निर्मिति एक

नहीं दो नहीं, अनेक चीजों की निर्मिति यहाँ होती है। उसपर कूलर्स से लेकर शतरंजी तक अनेक चीजें यहाँ बनाई जाती हैं। तकरीबन एक सौ चालीस प्रकार के उत्पादन यहाँ तयार होते हैं। आज इन उद्योगों का कारोबार ढाई करोड़ तक गया है।

आनंदवन यह मूल प्रकल्प, इसके आगे सोमनाथ (जिला चन्द्रपुर) उसी के साथ हेमलकसा का लोक बिरादरी और यवतमाल जिले के मूलगव्हान प्रकल्प की साथ है। आनन्दवन की आज जो प्रगति दीखती है उसके पीछे सैकड़ों हाथ हैं। एकदम उबड़खाबड़ और वीरान पथरीली जमीन यहाँ के कार्यकर्ताओंने अपनी श्रमशक्ति के जोर पर नंदनवन में रूपान्तरित की है। इन सब कार्यकर्ताओं को बाबा आमटे का नेतृत्व तो था ही पर विकास आमटे इन सक्रिय लोगों के सहारा परंपरा थे। आनंदवन प्रयोगवन इस पुस्तक में जितने प्रयोग दिए गए हैं। उनमें विकास आमटे का केवल ठोस हिस्सा ही नहीं अपितु इन प्रयोगों के जनक वे ही हैं। पर प्रयोगों का श्रेय वे अपनी टीम के कार्यकर्ताओं को देते है। इस पुस्तक में उल्लेखित कार्यकर्ताओं के नाम देखें तो ध्यान में आएगा, जैसे बाबा आमटे की तीसरी पीढ़ी अब इस प्रकल्प में काम कर रहे हैं। वैसे ही कार्यकर्ताओं की भी दूसरी पीढ़ी इसमें अब काम कर रही है।

बाबा के समय की चुनौतियां अलग थीं तो विकास आमटे के समय के प्रश्न अलग थे। कौस्तुभ और शीतल इस तीसरी पीढी में तो प्रश्नों का स्वरूप अलग ही हो गया है। पर प्रत्यक पिढ़ी अलग अलग प्रयोग करते हुए नया अंश तयार किया है तीसरी पीढी रास्ता तैयार कर रही है। बाबा के समय में पानी का प्रश्न था उस पर विकास आमटे ने उनके सहकारियों की सहायता से उत्तर ढूंढ निकाले। आनन्दवन परिसर में उन्होंने बांध बांधे, कूंए खुदवाए। जल संधाण के नएनए प्रयोग किए उसमें से उन्होंने आनन्दवन की पानी की कमी समाप्त की यह सब सहज नहीं हुआ। अक्षरशः मानव श्रम की परख करने वालों को इस काम में अनेक अडचने आने पर भी विकास आमटे और उनकी टीम पीछे नहीं हटी पानी रोकने के लिए बांध बांधे उसमें विकास आमटे और उनके साथियों ने व्यर्थ जो प्लास्टिक और फूटे हुए टायर होते हैं। उनका अत्यन्त सूझबूझ से उपयोग किया है। आज ये बांध दूसरों के लिए मॉडल है। आनन्दवनमें कुछ भी व्यर्थ जाने नहीं देते, इसलिए यहाँ गायभैसे के गोबर से वैसे गैस बनाई जाती है। वैसे ही मनुष्य के शौच से भी गॅस बनाई जाती है।

आनन्दवन में विकास आमटे ने कल्पना रखी और उनके सहकारियों ने उसे क्रियान्वित करके प्रत्यक्ष में लाने की रातदिन मेहनत करते है। ऐसा स्वरूप था और है। अर्थात श्रम करने में विकास आमटे सबके साथ सहभागी होते हैं। उनकी टीम के कार्यकर्ताओं ने कहीं से शास्त्र शुद्ध प्रशिक्षण नहीं लिया पर उसकी वजह से कहीं पर काम

रूका नहीं। बोअर खोदने के लिए उन्होंने जो साधन मिला वह प्रयोग में लाए उसका विस्तृत कथन पुस्तक में पढ सकते हैं। आज कौस्तुभ, उसकी पत्नी पल्लवी, शीतल और उसके पति गौतम यह आमटे की तीसरी पीढ़ी अलग प्रश्नों का सामना कर रही है। कुष्ठरोगियों के लिए सरकार की तरफ से जो सरकारी अनुदान बढने के लिए कौस्तुभ और शीतल ने पीछा किया इसके लिए आवश्यक तुलनात्मक विवरण, और वैसे ही होने वाला खर्च और सरकार के टुटपूंजिया अनुदान आदि की सूचि आकडेवार सरकार के पास सादर की, इससे सरकार को भी उनकी पक्ष ध्यान में और अनुदान में बढोतरी हुई उसका लाभ राज्य की सभी संस्थाओं को हुआ। आनंदवन आर्थिक दृष्टि से समृद्ध हो इसके लिए अब इन दोनों ने शाश्वत स्थिर निधि बनाने का निश्चय किया है। इसमें वे सफल होंगे ही 'आनंदवन प्रयोगवन यह पुस्तक केवल आमटे के तीन पिढ़ियों की कहानी ही नहीं बनाती अपितु आमटे ये कितने कार्यकारी तैयार किए और ये कार्यकर्ता कैसे बने और उन्होंने असाधारण यश कैसे प्राप्त किया इसकी जानकारी देती है। यह पुस्तक इन कार्यकर्ताओं के दृढ निश्चय और लगन के दर्शन कराती है। अनेकों को यह आनंद कथा जीवन को कैसे सुन्दर कर सकते हैं। इसके लिए प्रेरणा देती है।'

हिन्दी प्रस्तुति
डॉ.मधुश्री आर्य

आन्तर भारती की 'भारत दर्शन यात्रा'
उत्तर-पूर्वी भारत की दि. 11 मई से 17 मई 15 तक

दि. 8 मई को इच्छुक दार्जिलिंग देखेंगे
11 मई को सोनपुर से दीमापुर, दीमापुर से काजीरंगा
काजीरंगा से माजुली बेट, माजुली बेट से दीमापुर
दीमापुर से इंफाल, इंफाल से मणिपुर
मणिपुर से शिलांग, शिलांग से गुवहाटी

यात्रा संयोजक : हर्षदभाई रावल **08141973341**
e-mail:harshadraval70@gmail.com
हर्षदकुमार वासुदेव रावल, एस.बी.आय.रानिप (अहमदाबाद)
A/c No.30230807451 IFSC SBIN 0007476

आंतर भारती दिवस
(पंढरपुर सत्याग्रह एवं यदुनाथ थत्ते स्मृति समारोह)
१० मई २०१५
इसबार आसाम में, विशेष आयोजन
आयोजक
श्री हरीश भट्ट
कोकिला विकास आश्रम
ग्रा.पो.सोनापुर वाया-गोहपुर - ७८४१६८
जि.सोनीतपुर (आसाम)
harishbhatt132@gmail.com
Mo.09435563879/09435183391

कार्यक्रम

अध्यक्षता		श्रीमती अलका शर्मा
गीत प्रस्तुति	:	श्री मुकुंद तेलीचेरी
प्रास्ताविक	:	सदाविजय आर्य
वक्ता	:	डॉ.सी.जयशंकर बाबु (पाँडीचेरी)
	:	हेमंत जी बिहार
		डॉ.कमलताई ठकार (महाराष्ट्र)
		श्री अमर हबीब (महाराष्ट्र)
		श्री.पांडुरंग नाडकर्णी (गोवा)
		श्री हेम भाईजी
		उ.पू.भारत प्रतिनिधि
संचलन		श्री हर्षदभाई रावल
धन्यवाद	:	श्री हरीश भट्ट

दिनांक ९ मई को सूचना एवं संचार औद्योगिकी तथा बहु भाषाई कम्प्यूटिंग (Computing) कार्यशाला